अंग अंग सब उलसत, कुरबानी कारन।
जरे जरे पर वार हूं, ए जो बीच जरे राह इन।।२५।।

कुर्बानी के वास्ते मेरे सारे अंगों में उमंग भरी है और इस रास्ते के एक-एक कण पर मैं अपने आपको कुर्बान करती हूं।

जिन दिस मेरा पिउ बसे, तिन दिस पर होऊं कुरबान।
रोम रोम नख सिख लों, वार डारों जीव सों प्रान।। २६ ।।

जिस दिशा में मेरे धनी बसते हैं उस रास्ते पर मैं अपने रोम-रोम, नख से शिख तक जीव को प्राण सहित कुर्बान कर दूं।

सूरातन सखियन का, मुख थें कह्यो न जाए।
महामत कहें सो समया, निपट निकट पोहोंच्या आए।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब कुर्बानी का समय निकट आ गया है। मोमिन बहादुरी की वह कुर्बानी करेंगे जिसका वर्णन इस मुख से नहीं होता।

॥ प्रकरण ॥ ९० ॥ चौपाई ॥ १२८५ ॥

राग श्री

आगूं आसिक ऐसे कहे, जो माया थें उतपन।
कोट बेर मासूक पर, उड़ाए देवें अपना तन।। १ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! इस माया में पहले भी आशिक हुए हैं, जिन्होंने अपने माशूक पर करोड़ों बार अपने तन को कुर्बान कर दिया है।

जीव माया के ऐसी करें, कैयों देखे दृष्ट।
ओ भी उन पर यों करें, तो हम तो हैं ब्रह्मसृष्ट।। २ ।।

ऐसे आशिकों को बहुतों ने देखा है। यदि माया के जीव ऐसा कर सकते हैं तो हम तो ब्रह्मसृष्टि हैं। कुर्बानी से क्यों पीछे हटें?

धिक धिक पड़ो तिन समझ को, जो पीछे देवें पाए।
कुरबानी को नाम सुन, क्यों न उड़े अरवाहें।। ३ ।।

ऐसे सुन्दरसाथ जो कुर्बानी से पीछे हटते हैं, उनकी समझ पर धिक्कार है। कुर्बानी का नाम सुनते ही उन्हें अपनी अरवाहें छोड़ देनी चाहिएं।

जो नकल हमारे की नकल, तिनका होत ए हाल।
तो पीछे पांउं हम क्यों देवें, हम सिर नूरजमाल।। ४ ।।

हमारी नकल फरिश्ते और फरिश्तों की नकल जीवसृष्टि है। वह यदि इतनी कुर्बानी कर सकते हैं तो हम तो ब्रह्मसृष्टि हैं। हमारे धनी श्री राजजी महाराज हैं तो कुर्बानी से हम क्यों पीछे हटें?

जो आसिक असल अर्स की, सो क्यों सकुचे देते जिउ।
करे कुरबानी कोट बेर, ऊपर अपने पिउ।। ५ ।।

जो धाम धनी के असल आशिक हैं वह अपने जीव तक की कुर्बानी देने में संकोच नहीं करेंगे। वह अपने प्राण श्री राजजी महाराज पर कुर्बान होने के लिए करोड़ों बार तैयार रहेंगे।

Nijanand App

सो भी पिउ अछरातीत, इत कायर न होवे कोए।
सुनत कुरबानी के आगे हीं, तन रोम रोम जुदे होए।। ६ ।।

वह भी श्री राजजी महाराज अक्षरातीत धाम के हैं, इसलिए कोई कायरता नहीं दिखाएंगे। कुर्बानी का नाम सुनते ही उनके रोम-रोम पहले से ही कुर्बान हो जाएंगे।

इन खसम के नाम पर, कई कोट बेर वारों तन।
टूक टूक कर डार हूं, कर मन वाचा करमन।। ७ ।।

ऐसे धनी के नाम पर अपने तन को करोड़ो बार कुर्बान कर दूं। मन, वचन और कर्म से इस तन के टुकड़े-टुकड़े कर डालूं।

जो आसिक अर्स अजीम के, तिन सिर नूरजमाल।
परीछा तिनकी जाहेर, सब्द लगें ज्यों भाल।। ८ ।।

जो मोमिन अर्श अजीम (परमधाम) के हैं उनके धनी नूरजमाल श्री राजजी महाराज हैं। ऐसे मोमिनों की परीक्षा यह है कि उनको यह वाणी भाले के समान हृदय में घाव कर देती है।

जो सोहागिन वतनी, ताकी प्रगट पेहेचान।
रोम रोम सब अंगों, जुदी जुदी दे कुरबान।। ९ ।।

जो परमधाम की सुहागिनी अंगना हैं उनकी यही जाहिरी पहचान है कि वह अपने सब अंगों के रोम-रोम के टुकड़े कर कुर्बान कर देंगी।

कुरबानी को सब अंग, हंस हंस दिल हरखत।
पिउ पर फना होवने, सब अंगों नाचत।।१० ।।

धनी पर कुर्बान होने के लिए उनके सब अंग हंसते हुए तैयार रहते हैं और धनी पर फना होने के लिए खुशी से नाचते हैं।

आसिक कबूं ना अटके, करत अंग कुरबान।
ना जीव अंग आसिक के, जीव पिउ अंग में जान।। ११ ।।

अपने अंग को कुर्बान करने में आशिक कभी पीछे नहीं हटते। आशिक का जीव उसके अंग में नहीं होता। उसका जीव प्यारे माशूक में होता है।

अंग आसिक आगूं हीं फना, जीवत मासूक के माहें।
डोरी हाथ मेहेबूब के, या राखे या फनाए।। १२ ।।

आशिक के अंग जीते जी ही माशूक पर फना होते हैं। उसका जीवन माशूक ही होता है। उसका जीवन उसके माशूक के हाथ होता है। वह उसे जिन्दा रखे या मार डाले।

तो अंग आधा अरधांग, मासूक का आसिक।
तो दोऊ तन एक भए, जो इस्क लाग्या हक।। १३ ।।

इसलिए आशिक माशूक की अंगना (अर्धांग) कहलाती है। जब पारब्रह्म से इश्क हो जाता है तो दोनों तन एक हो जाते हैं।

सोई कहावत आसिक, जिन अंग जोस फुरत।
अहनिस पिउ के अंग में, रेहेत आसिक की सुरत।। १४ ।।

आशिक उसी को कहते हैं जिसके अंग में धनी से मिलने के लिए जोश की तंरगें उठती हैं और रात-दिन धनी के अंग में जिसका ध्यान रहता है।

Nijanand App

मासूक की नजर तले, आठों जाम आसिक।
पिए अमीरस सनकूल, हुकम तले बेसक।। १५ ।।

आशिक आठों पहर (रात-दिन) माशूक की नजर में बसा रहता है और निडर होकर माशूक की नजरे करम का रसपान करता है।

न्यारा निमख न होवहीं, करने पड़े न याद।
आसिक को मासूक का, कोई इन बिध लाग्या स्वाद।। १६ ।।

आशिक को कभी भी अपने माशूक को याद नहीं करना पड़ता क्योंकि वह एक क्षण भी जुदा नहीं होता है। आशिक को माशूक की मस्ती का ऐसा नशा चढ़ा रहता है जो कभी नहीं उतरता है।

रोम रोम बीच रमि रह्या, पिउ आसिक के अंग।
इस्कें ले ऐसा किया, कोई हो गया एकै रंग।। १७ ।।

आशिक के अंग के रोम-रोम में उसका माशूक समाया रहता है और इश्क में दोनों एक ही मस्ती में होते हैं।

इन जुबां इन आसिक का, क्यों कर कहूं सो बल।
धाम धनी आसिक सों, जुदा होए न सकें एक पल।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस जबान से आशिक की शक्ति का वर्णन कैसे करूं? धाम-धनी अपने आशिक (ब्रह्मसृष्टि) से एक क्षण के लिए भी जुदा नहीं होते।

महामत कहें मेहेबूब के, रोम रोम लगे घाए।
इन अंग को अचरज होत है, अजूं ले खड़ा अरवाए।। १९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे लाडले श्री राजजी महाराज के इश्क के घाव मेरे रोम-रोम में लगे हैं। फिर भी हैरानी की बात है कि यह तन खड़ा कैसे है?

॥ प्रकरण ॥ ९१ ॥ चौपाई ॥ १३०४ ॥

राग श्री

अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो सबे हुसियार।
एक खिन की बिलम न कीजिए, जाए घरों करें करार।। १ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथजी को कहते हैं कि अब हम सब तरफ से चित्त हटाकर परमधाम में चित्त लगाते हैं और तुम सभी सावचेत हो जाना। यदि तुम भी वह सुख चाहते हो तो तुम एक पल की देरी न करो और अपने अखण्ड घर परमधाम में सुरता लगाकर मगन हो जाओ।

साथ देखो ए अवसर, वासना करो पेहेचान।
आए पोहोंचे बृज में, याद करो निसान।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! यह सुन्दर मौका हाथ आया है। अपनी आत्मा की पहचान कर लो। पहले धाम से बृज में आए थे। उसी लीला को याद करो।

धनिएं देखाया नजरों, सुरतां दैयां फिराए।
अब पैठे हम रास में, उछरंग हिरदे चढ़ आए।। ३ ।।

धनी ने सुरता घुमाकर बृज का खेल दिखाया। उसके बाद हम रास में गए और धनी के साथ मस्ती में खेले।

Nijanand App